International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 01-01-2021; Accepted: 17-02-2021; Published: 17-03-2021
www.hindijournal.com
Volume 7; Issue 2; 2021; Page No. 36-39

लोकगीतों का स्वरूप

डॉ. विश्वनाथ महादू देशमुख

सहायक प्राध्यापक, (हिंदी), राजाराम महाविद्यालय, कोल्हापूर, महाराष्ट्र, भारत

सारांश

भारत देश सांस्कृतिक विविधता का वहन करनेवाला देश है। अनेकता में एकता इसकी ताकत है। साहित्य नागरी संस्कृति का परिणाम है, तो लोकसाहित्य ग्राम, देहात का। लोकसाहित्य के विविध रूपों के दर्शन होते हैं। लोककथा, लोकगीत, लोककला, लोकनाट्य, कहाँवते, लोकप्रचार आदि कई रूपों के दर्शन होते हैं। लोकगीत लोकसाहित्य का आत्मा है। जनमानस के सांस्कृतिक, पारंपारिक मूल्यों का दर्शन लोकगीतों के माध्यम से प्रकट होता है। गीतों के माध्यम से परंपरा का निर्वाह, जनजीवन की अभिव्यक्ति प्रस्तुत होती है। लोकगीत लोकसाहित्य का प्रमुख अंग है। भारत के प्रत्येक प्रांत में लोकगीतों का मधुर संगीत का स्वर गूंजता हुआ प्रतित होता है।

लोकसाहित्य के अंतर्गत लोकगीत अंतर्भूत होते हैं। लोकगीतों को लोकसाहित्य का आत्मा कहा जाता है। लोकसाहित्य के प्रत्येक अंगों में लोकगीतों की धून बजती रहती है। इन गीतों का प्रवाह प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक बहते हुए जनमानस के हृद्य के गान को प्रस्तुत कर रहा है। प्राचीन काल से पीढ़ी-दर-पीढ़ी संक्रमित होते-होते लोकगीतों की परंपरा का प्रवाह अविच्छिन्न रूप से प्रवाहित हो रहा है। लोकगीतों का निर्माता अनभिज्ञ होता है। गांव-देहातों में जनसामान्य मौखिक रूप को अपनाते हुए अपने सुख-दु:ख के क्षणों को इन लोकगीतों के सहारे व्यक्त करते हैं। लोकगीतों के माध्यम से लोकजीवन का दर्शन सहज होता है।

मूल शब्द: भारत, सांस्कृतिक, लोकसाहित्य, लोकगीत, आत्मा

प्रस्तावना

भारत में लोकगीतों की परंपरा अत्यंत प्राचीन काल से चली आ रही है। प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद, ब्राह्मण, आरण्यक ग्रंथ, शतपथ ब्राह्मण, ऐतरेय ब्राह्मण आदि में लोकगीतों का उल्लेख 'गाथा' मिलता है। श्रीमदभागवत के रचयिता महर्षि वेदव्यास ने भी भगवान श्रीकृष्ण के जन्म के अवसर पर गीत के गाने का उल्लेख बडे ही सुन्दर शब्दों में किया है। लोकसंस्कृति, रीतिरिवाज आदि को लोकगीत के माध्यम से व्यक्त किया जाता है। लोकगीत कभी नये या पुराने नहीं होते। वह तो विशाल वृक्ष की वह जड़े होती है जो भूतकाल से जमीन में धँसी होती है, किन्तु वृक्ष की डालियाँ नया रूप धारण कर फलती, फुलती है।

लोकगीत परिचय

सामान्यत: लोकगीतों को किसी परिधि में बाँधकर रखना संभव नहीं है। उसके प्रवाह का न कोई ओर है न छोर। जिसतरह समंदर के जल को बांधकर रखा नहीं जा सकता उसी तरह लोकगीतों का

स्वरूप भी विशाल तथा आबद्ध है। विश्व के हर समाज, व्यक्ति को वह प्रभावित करता है। लोकगीतों का आकार समंदर की भांति विशाल है। डॉ. यादव जी ने "लोकगीतों के तत्व बनाये है जिसके अध्ययन से लोकगीतों के मूल स्वरूप का पता चलता है-

1. लोकगीत किसी समुह की भाषा में होते है।
2. लोकगीत भाषा, अलंकार तथा कृत्रिमता से परें होते हैं।
3. इसका कोई रचनाकार नहीं होता।
4. वह सामूहिक रचना होती है।
5. शैली में सहजता होती है।
6. इसे आशु रचना कहा जाता है।
7. इसका रचनाकाल अज्ञात होता है।
8. इसमें पुनरावृत्ति होती है।
9. इसमें प्रश्नोत्तर शैली (प्रणाली) मिलती है।
10. निरर्थक शब्दों का प्रयोग भी होता है।
11. लोकगीत प्राय: अलिखित होते हैं।
12. लोकगीत मौखिक परंपरा में लोक में बिखरे होते हैं।

लोकगीत: अर्थ

लोकगीतों के संबंध में अनेक विद्वानों ने अपने विचार प्रकट किए हैं। लोकगीत का निर्माण 'लोक' और 'गीत' इन दो शब्दों के संयोग से हुआ है। लोकगीत के संबंध में मराठी, हिंदी तथा अंग्रेजी शब्दकोश में विभिन्न अर्थ दृष्टिगत होते हैं। विभिन्न रूपों में उसे देखा जा सकता है।

"लोकगीत'-गांव, देहातों में गाये जाने वाले जनसाधारण के गीत। फोकलोर।"

"लोकगीत'- साधारण जनता में प्रचलित गीत।"

"लोकगीत'- साधारण जनता में प्रचलित गीत।"

Folklore"Folklore-Legendary TraditionTradition-पौराणिक कथा, घरेलू कथा, कहानी।"

"लोकगीत'- जनसमुदाय में प्रचलित परंपरागत गीत।"

"FolkloreFolklore- जनवार्ता।"

"लोकवार्ता-Folklore"Folk

"FolkloreFolklore- The tradition, Stories, customs etc. of a community or the Study of these tehese. Folk"

उपर्युक्त अर्थों से ज्ञात होता है कि ये लोकगीत जनमानस के हृदय से निकले हुए वह स्वर है जो सदियों से परंपरा और संस्कृति का गान करते आ रहे हैं। विभिन्न शब्द कोशों के अर्थ यही दर्शाते है कि यह गीत जनसामान्य के अपने गीत है, गांव, देहातों में इसका गान प्रचुर मात्रा में हो रहा है। प्रकृति की गोद में जीवनयापन कर वृक्ष, पेड़-पौधे, नदी-पर्वतों में स्वच्छंदता से रहकर अपने मन के भावों को स्वरों में व्यक्त कर रहे हैं। भारतीय संस्कृति की झलक इन गीतों में दृष्टिगत होती है। देश की विविधता में एकता के प्रतीक के रूप में यह लोकगीत अपने परंपरा का निर्वाह कर रहे हैं।

लोकगीत: परिभाषा

लोकसाहित्य में लोकगीतों का अत्यंत महत्व होता है। लोकसाहित्य के विभिन्न अंग जैसे- लोकनाट्य, लोककथा, लोकनृत्य, लोककाव्य आदि में गीतों का अंतर्भाव महत्वपूर्ण होता है। लोकगीतों का धारा-प्रवाह प्राचीन काल से ही प्रवाहित होकर परंपरा और संस्कृति का वहन कर रहा है। जनमानस में मनुष्य के अंग-प्रसंगों में संस्कृति की झाँकी विविध कार्यकलापों में दृष्टिगत होती है। वह अपने भावों, विचारों को स्वरों में बद्ध करके अभिव्यक्त करता है।

विभिन्न विद्वानों, लोकसाहित्य के अध्याताओं ने लोकगीतों को परिभाषा देने का प्रयास किया है। इन गीतों की परिभाषा प्रस्तुत कर जनमानस के जड़ों तक पहुँचाने का प्रयास किया है। वह इस प्रकार है-

डॉ. सरोजिनी बाबर ने लोकगीतों के संदर्भ में कहा है- "विविध प्रकारच्या जातीवंत स्वरविलासानी शिणगारलेले व अशिक्षितांनी कित्येक वर्षा मागे रचिले असतानाही केवळ पाठांतराच्या बळावर

पिढ्यानंपिढ्या आपल्या नवनवोन्मेषशाली तेजाने पुढच्या पिढीला उत्तेजित करणारे भावगीत होय. हे लोकगीत म्हणजे सामान्य माणसाच्या सामुदायिक जीवनाची अभिव्यक्ती होय. ”

लोकसाहित्य के पाश्चात्य अध्येयता क्रॉप कहते हैं- “लोकगीत म्हणजे भावगीत (LyricsLyric) किंवा ललितकृति असून त्याला चाल असते. लोकगीतांचा उगम निरक्षरात आलेला असून त्याचा कर्ता अनामिक असतो. लोकगीत ही भूतकाळातील कृती असून पुष्कळदा कित्येक शतकांची परंपरा तिच्या पाठीमागे असते. ”

folk-“A folk song is a spontaneous out of life or the people that line in more or less primitive condition cut side the sphere of sophisticated influence.”

“He (Grine) maintained that the poetry of the people ‘sing itself’, it has no individual poet behind it and is product of the whole folk.’-F.B. Gummer” song is a sponteneous out of life or the people.

“नए गीतों के साथ पिछले धुलते है। नई पीढ़ी, नये भाव यही गीतों की परंपरा है। गीतों में विज्ञान की तराश नहीं, मानव संस्कृति का सारल्य और व्यापक भावों का उभार होता है। भावों की लड़ियाँ लम्बे-लम्बे खेतों की स्वच्छ पेडों की नंगी डालों सी रफ (roughRough) और तिट्टी की तरह सत्य है।- श्याम परमार”

“लोकगीत विद्यादेवी के बौद्धिक उद्यान के कृत्रिम फूल नहीं, वे मानों अकृत्रिम निसर्ग के श्वास-प्रश्वास है। वे भारी विद्वता के भार से सूक्ष्म बुद्धि की नली के हजारे छुटने वाला तर्क-वितर्क का फौवारा नहीं, अज्ञात मलयाचल से आनेवाली सुगन्धित लहरियों उद्भूत हृद्य की सूक्ष्म तरंगे है। वे सहजानन्द में ही विलीन हो जानेवाली आनन्दमयी गुफायें हैं।’- डॉ. सदाशिव फडके”

उड़िया भाषा के विद्वान कुंजबिहारी दास ने लोकगीतों की परिभाषा करते हुए लिखा है- “लोकगीत उन लोगों के जीवन की अनायास प्रवाहत्मकता की अभिव्यक्ती है जो सुसंस्कृत, सुसभ्य प्रभावों से बाहर रहकर कम या अधिक रूप से आदिम अवस्था में निवास करते हैं।”

हिंदी लोकसाहित्य के मर्मज्ञ श्री रामनरेश त्रिपाठी ने लोकगीत की परिभाषा लिखते हुए कहा है- “ग्रामगीत प्रकृति के उद्गम है। इनमें अलंकार नहीं केवल रस है।

छन्द नहीं केवल लय है। लालित्य नहीं केवल माधुर्य है। ग्रामीण मनुष्य के स्त्री-पुरुषों के मध्य में हृद्य नामक आसन पर प्रकृति गान करती है। प्रकृति के वे ही ग्रामगीत है।”

डॉ. सत्येन्द्र ने लोकगीत के संदर्भ में कहा है- “वह गीत जो लोक-मानस की अभिव्यक्ति हो, अथवा जिसमें लोक-मानसाभास भी हो, लोकगीत के अंतर्गत आयेगा।”

इन्साइक्लेपीडिया ब्रिटानिका में लोकगीत के संबंध में कहा है- “A further and very important limitation of Folk song must be mentioned namely that it sureness by Purely oral tradition. ”

विभिन्न विद्वानों द्वारा परिभाषित लोकगीतों की परिभाषाओं से ज्ञात होता है कि लोकगीत जनमानस की वह अनुभूति है, वह अभिव्यक्ती है, जिनके द्वारा हृदय से निकले सहज सुन्दर स्वर है। वह स्वर लयात्मक शैली में व्यक्त होते हैं। मानव सभ्यता और संस्कृति की झलक इन गीतों में अभिव्यक्त होती है। लोकगीत सामान्यजनों का मनोरंजन करता है, वह प्रेरणा देता है, वह कठीन से कठीन कार्य को भी आसान बना देता है। वह किसान, मजदूर, श्रमकारी जनता का उदघोष बन जाता है। लोकगीत परंपरा, संस्कृति, विश्वास पर आधारित होते हैं, जो लोकजीवन का यथार्थ रूप हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं।

लोकगीतों के विभिन्न प्रकार

लोकसाहित्य के विद्वान तथा अध्येयताओं ने लोकगीतों का वर्गीकरण विभिन्न रूप से किया है। अनेक विद्ववानों ने वर्गीकरण की विभिन्न

पद्धतियों का अवलंब किया है, जो कभी-कभी दोषपूर्ण लगता है। हिंदी प्रदेशों के लोकगीतों का वर्गीकरण करने का प्रयास सर्वप्रथम राम नरेश त्रिपाठी ने किया है। डॉ. श्याम परमार ने लोकगीतों का वर्गीकरण चार भागों में किया है। आगे चलकर पंडित सूर्यकिरण पारीक ने लोकगीतों का वर्गीकरण 29 शिर्षकों में किया है। उनमें विस्तार तो है किन्तु क्रमबद्धता नहीं है।

लोकगीतों का वर्गीकरण करना थोडा कठीण कार्य है। लोकगीतों का वर्गीकरण करते समय विद्वानों ने कहीं विषयवस्तु को आधार माना है तो कहीं गेय शैली को। वर्गीकरण ऐसा हो जो सर्वसम्मत, वैज्ञानिक और दोषपूर्ण न हो तथा लोकगीतों के सभी पक्षों को छुता हो। 'डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय ने "लोकगीतों को-1) संस्कार गीत 2)ऋतु संबंधी गीत 3) व्रत संबंधी गीत 4) जाति संबंधी गीत 5) श्रमगीत 6) देवी-देवताओं के गीत 7) विविध गीत आदि सात श्रेणियों में विभाजन किया है।"

निष्कर्ष

लोकसाहित्य सांस्कृतिक परंपरा का निर्वाह करनेवाला साहित्य है। आज पूरा विश्व भारतीय संस्कृति की ओर आकर्षित हो रहा है। खान-पान, रहन-सहन, आचार-विचार, बोली-भाषा की विभिन्नता, धर्म-पंत के अनुसार आचरण आदि की विविधता देश का आकर्षण है। लोकगीत को लोकसाहित्य की आत्मा कहा जाता है। लोकगोतों का निर्वाह मौखिक परंपरा से किया जाता है। पीढ़ी-दर-पीढ़ी यह परंपरा संक्रमित होती रहती है। विभिन्न जाति-जमातियों में फैली हुई लोकसाहित्य की सांस्कृतिक झाँकियाँ देश का गौरव है। शोधकार्य की दृष्टि से यह क्षेत्र आज भी वंचित रहा है। लोकसाहित्य के विभिन्न अध्ययनकर्ता, विद्वानों ने बड़े परिश्रम से इस सांस्कृतिक प्रवाह के विभिन्न रूपों को समाज के सामने लाने का प्रयास किया है।

संदर्भ

1. श्री नवलजी, नालंदा विशाल शब्द सागर, अदिश बुक डेपो, दिल्ली, सं. 1989, पृ. 1221
2. गो. प. नेने, श्रीपाद जोशी, बृहद मराठी-हिंदी शब्दकोश, महाराष्ट्र राजभाषा पुणे, सं.1971 पृ. 629
3. मुकुन्दलाल श्रीवास्तव, ज्ञान शब्दकोश, ज्ञान मंडल लि. विक्रम भवन, वाराणसी सं.1993
4. पृ. 712
5. Prof. Pathak R. C., Bhargava's Illustrated Standard Dictionary, At the Bhargava's Press Publication Banaras 1936, page no. 341
6. डॉ. हरदेव बाहरी, शिक्षार्थी हिंदी-अंग्रेजी शब्दकोश, राजपाल एंड सन्स कश्मीरी गेट, दिल्ली सं. 2001, पृ. 727
7. Dr. Hardev Bahari, Rajpal English-Hindi Dictionary, Rajpal & Sans Kashmiri Gate, Publication, Delhi, 2001, page no. 279
8. A S. Harnby, Oxford Advance Learner's Dictionary, Oxford University, press, Publication, England,1996, page no. 456
9. डॉ. शरद व्यवहारे, लोकसाहित्य: उद्गम आणि विकास, विश्वभारती प्रकाशन, नागपुर, प्रथम सं. 1987, पृ. 32
10. विद्या चौहान, लोकगीतों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, प्रगति प्रकाशन, आगरा, प्रथम सं. 1972, पृ. 74
11. डॉ. द्विजराम यादव, लोकसाहित्य, शिल्पी प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम सं.1993, पृ. 16 डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय, भारत में लोकसाहित्य,साहित्य भवन, इलाहाबाद, प्रथम सं. 1998, पृ. 22